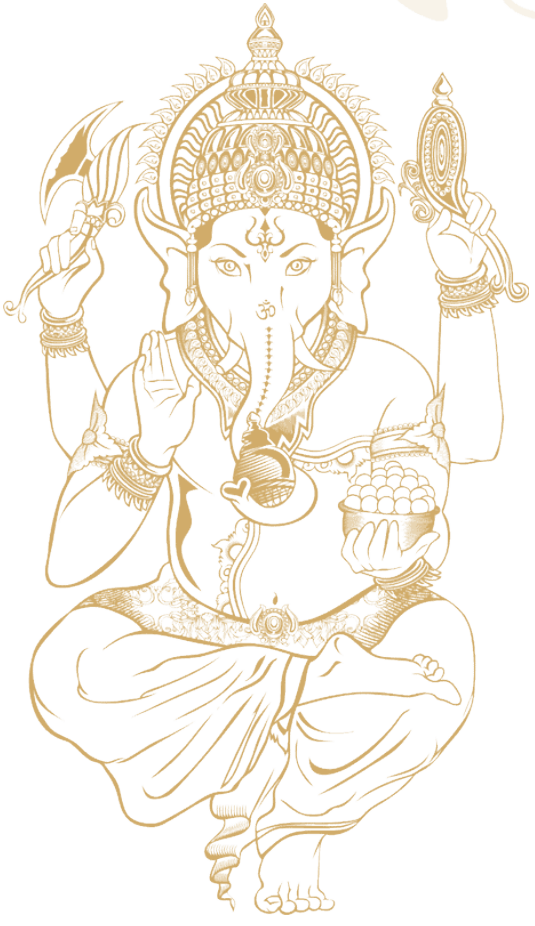

Chinmay Jain

Niharika jain

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121159001

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121159001 Date: 04/02/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
30/12/1995	जन्म तिथि	28/07/1999
शनिवार	दिन	बुधवार
घंटे 18:45:00	जन्म समय	19:40:00 घंटे
घटी 29:41:02	जन्म समय(घटी)	34:48:36 घटी
India	देश	India
Chhindwara	स्थान	Gwalior
22:04:00 उत्तर	अक्षांश	26:12:00 उत्तर
78:58:00 पूर्व	रेखांश	78:09:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:14:08	स्थानिक संस्कार	-00:17:24 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:52:35	सूर्योदय	05:40:41
17:40:21	सूर्यास्त	19:06:40
23:48:11	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:52

मिथुन	लग्न	मकर
बुध	लग्न लग्नाधिपति	शनि
मेष	राशि	मकर
मंगल	राशि-स्वामी	शनि
अश्विनी	नक्षत्र	श्रवण
केतु	नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
2	चरण	1
शिव	योग	प्रीति
तैतिल	करण	बालव
चे-चेतन	जन्म नामाक्षर	खी-खिली
मकर	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह
क्षत्रिय	वर्ण	वैश्य
चतुष्पाद	वश्य	जलचर
अश्व	योनि	वानर
देव	गण	देव
आद्य	नाड़ी	अन्त्य
सिंह	वर्ग	मार्जार

Pulak Sagarm
T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
केतु 4वर्ष 3मा 24दि		29:42:18	मिथु	लग्न	मक	21:58:58	चन्द्र 8वर्ष 1मा 0दि	
सूर्य		14:33:41	धनु	सूर्य	कर्क	11:13:21	राहु	
24/04/2020		05:06:38	मेष	चंद्र	मक	12:33:19	28/08/2014	
25/04/2026		29:14:20	धनु	मंगल	तुला	15:49:53	27/08/2032	
सूर्य	12/08/2020	03:34:45	मक	बुध व	कर्क	08:02:18	राहु	10/05/2017
चन्द्र	10/02/2021	05:20:48	धनु	गुरु	मेष	09:55:12	गुरु	03/10/2019
मंगल	18/06/2021	17:02:10	मक	शुक्र	सिंह	11:14:24	शनि	09/08/2022
राहु	13/05/2022	25:29:47	कुंभ	शनि	मेष	22:25:11	बुध	26/02/2025
गुरु	01/03/2023	29:42:56	कन्या व	राहु व	कर्क	19:04:42	केतु	16/03/2026
शनि	11/02/2024	29:42:56	मीन व	केतु व	मक	19:04:42	शुक्र	16/03/2029
बुध	17/12/2024	05:27:57	मक	हर्ष व	मक	21:22:19	सूर्य	08/02/2030
केतु	24/04/2025	00:49:20	मक	नेप व	मक	09:04:07	चन्द्र	10/08/2031
शुक्र	25/04/2026	08:05:54	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	14:00:49	मंगल	27/08/2032

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:48:11 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:52

लग्न-चलित

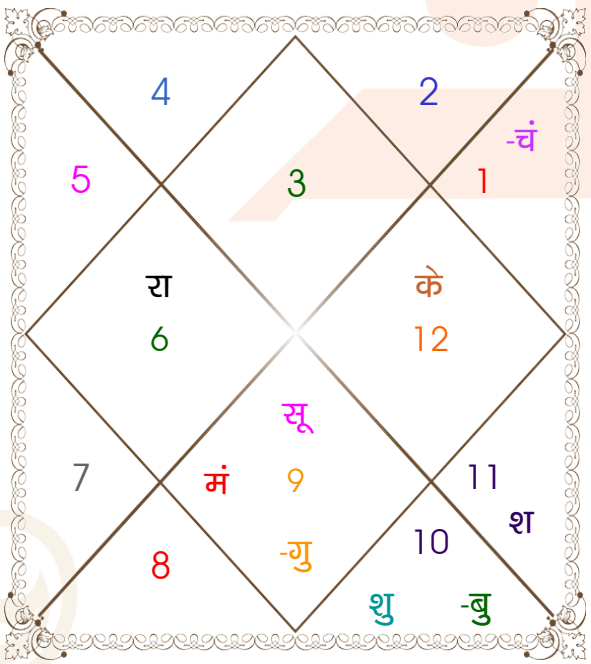

लग्न-चलित

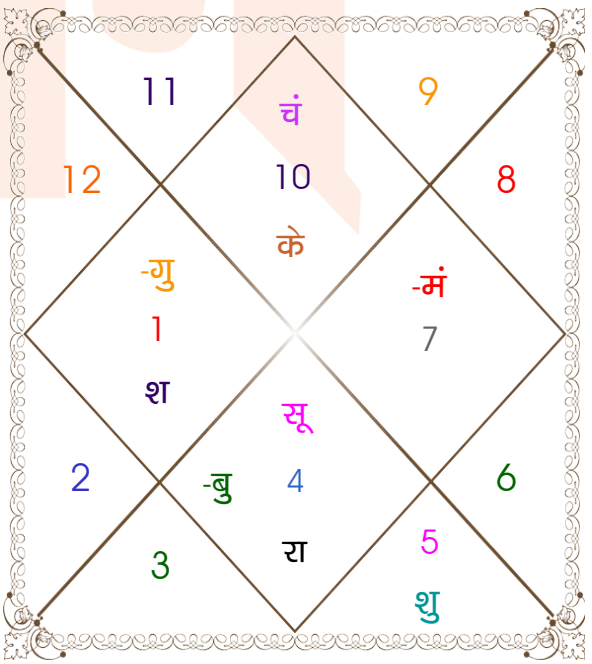

Pulak Sagarm
T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	अश्व	वानर	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	शनि	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	मकर	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

कुल : **28 / 36**

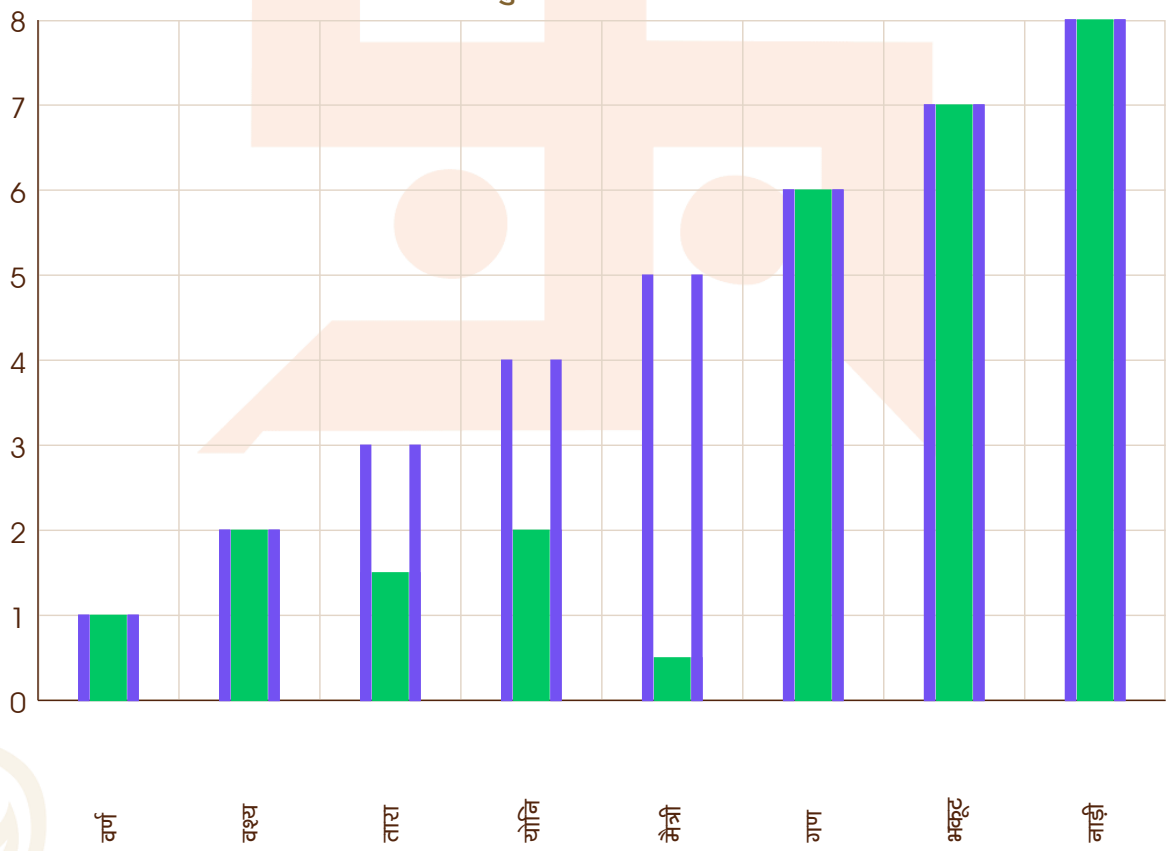

Pulak Sagarm
T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

अष्टकूट मिलान

बेपदउंल श्रंपद का वर्ग सिंह है तथा छर्पीतपां रंपद का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार बेपदउंल श्रंपद और छर्पीतपां रंपद का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

बेपदउंल श्रंपद मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु बेपदउंल श्रंपद कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

छर्पीतपां रंपद मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में दशम् भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु छर्पीतपां रंपद कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

बेपदउंल श्रंपद तथा छर्पीतपां रंपद में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

बेपदउंल श्रंपद का वर्ण क्षत्रिय तथा छपींतपां रंपद का वर्ण वैश्य है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाववश छपींतपां रंपद आज्ञाकारी, सेवा करने वाली तथा विश्वासपात्र होगी। साथ ही छपींतपां रंपद की हमेशा कम खर्च करके परिवार के लिए पैसे बचाने की आदत रहेगी ताकि जिससे ये पैसे भविष्य में काम आ सकें।

वश्य

बेपदउंल श्रंपद का वश्य चतुष्पद है एवं छपींतपां रंपद का वश्य भी चतुष्पद है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके फलस्वरूप बेपदउंल श्रंपद एवं छपींतपां रंपद दोनों के स्वभाव, पसंद एक समान होंगे तथा आपसी तालमेल काफी अच्छा रहेगा, जिससे परिवार में सुख, शांति एवं समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता रहेगा। दोनों के बीच अत्यधिक प्रेम की भावना भी बनी रहेगी।

तारा

बेपदउंल श्रंपद की तारा वध तथा छपींतपां रंपद की तारा क्षेम है। बेपदउंल श्रंपद की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। बेपदउंल श्रंपद बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं भोग-विलास की आदतों का शिकार हो सकता है। बेपदउंल श्रंपद को शराब एवं ड्रग की लत लग सकती है किंतु छपींतपां रंपद लगातार उसकी भलाई के उद्देश्य से उसे सुधारने का प्रयास करती रहेगी। इस प्रकार उसके अच्छे प्रयासों का परिणाम सार्थक हो सकता है।

योनि

बेपदउंल श्रंपद की योनि अश्व है तथा छपींतपां रंपद की योनि वानर है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता

कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में बेपदउंल श्रंपद का राशि स्वामी छपींतपां रंपद के राशि स्वामी से सम का संबंध रखता है। जबकि छपींतपां रंपद का राशि स्वामी बेपदउंल श्रंपद के राशि स्वामी के साथ शत्रु का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से खराब मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी का राशि स्वामी दूसरे के लिए सम किंतु दूसरा उसे शत्रु मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि यह बहस कभी-कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोट एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो सकती है।

गण

बेपदउंल श्रंपद का गण देव तथा छपींतपां रंपद का गण भी देव है। अर्थात दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाववश दोनों दयालु, सहृदय, मृदु, सौम्य एवं संवेदनशील स्वभाव के होंगे। साथ ही दोनों एक-दूसरे के अति अनुकूल होंगे तथा एक-दूसरे का काफी ख्याल रखने वाले होंगे। ऐसी स्थिति में वैवाहिक संबंध के उपरांत शांति, सुख, खुशहाली एवं समृद्धि हमेशा कदम चूमती रहेगी।

भकूट

बेपदउंल श्रंपद से छपींतपां रंपद की राशि दशम भाव में स्थित है तथा छपींतपां रंपद से बेपदउंल श्रंपद की राशि चतुर्थ भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण बेपदउंल श्रंपद एक पारिवारिक व्यक्ति होंगे तथा अपनी पत्नी एवं बच्चों समेत परिवार के हर सदस्य की देखभाल करेंगे। उन्हें अपने संबंधियों से ही खुशी प्राप्त होगी तथा उनकी पत्नी सदैव कर्त्तव्यों के निर्वहन में उनकी मदद करती रहेंगी। छपींतपां रंपद को घर, वाहन, मां का प्यार समेत जीवन में हर सुख एवं खुशी प्राप्त होगी। छपींतपां रंपद हमेशा अपने पति की परछाईं बनकर सदैव उनकी सहायता करती रहेंगी।

नाड़ी

बेपदउंल श्रंपद की नाड़ी आद्य है तथा छपींतपां रंपद की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात

दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान में शरीर के दो महत्वपूर्ण अवयवों वात एवं कफ का संतुलन होता है। बेपदउंल श्रंपद की आद्य नाड़ी तथा छर्पीतपां रंपद की अन्त्य नाड़ी अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ एवं मजबूत शरीर, दम्पत्ति के आपसी प्रेम एवं समझदारी की द्योतक हैं। जिसके कारण आपकी संतान स्वस्थ, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

Pulak Sagarm
T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

मेलापक फलित

स्वभाव

बेपदउंल श्रंपद की राशि मेष तथा छर्पीतपां रंपद की राशि मकर है। मेष राशि अग्नि तत्व तथा मकर राशि पृथ्वी तत्व युक्त है। अतः बेपदउंल श्रंपद और छर्पीतपां रंपद के मध्य पर्याप्त वैचारिक मतभेद होंगे जिससे परस्पर स्नेह एवं अपनत्व के भाव में न्यूनता रहेगी। अतः मिलान परस्पर सामंजस्य से ही उत्तम हो सकता है।

बेपदउंल श्रंपद की राशि का स्वामी मंगल तथा छर्पीतपां रंपद की राशि का स्वामी शनि है। छर्पीतपां रंपद की राशि से बेपदउंल श्रंपद का राशि स्वामी सम परन्तु बेपदउंल श्रंपद का स्वामी राशि छर्पीतपां रंपद की राशि स्वामी का शत्रु है । अतः इसके प्रभाव से बेपदउंल श्रंपद और छर्पीतपां रंपद दोनों स्वकेद्रित व्यक्तित्व होंगे तथा अपने परिश्रम योग्यता एवं प्रयासों से कार्यो को सिद्ध करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आर्थिक मामलों में यदा कदा मतभेदों की भी संभावना रहेगी अतः असहमतियों में न्यूनता करके ही इनका मिलान उत्तम हो सकता है।

बेपदउंल श्रंपद की राशि छर्पीतपां रंपद की राशि से चतुर्थ तथा छर्पीतपां रंपद की राशि बेपदउंल श्रंपद की राशि से दशम भाव में है। अतः यह शुभ भकूट है। इसके प्रभाव से इनके उपरोक्त वैचारिक मतभेदों तथा अन्यत्र अंतर होते हुए भी संबधों में मधुरता का भाव उत्पन्न हो सकता है। इस मामले में छर्पीतपां रंपद की सक्रियता सकारात्मक फल प्रदान करेगी तथा परस्पर स्नेह के भाव में वृद्धि होगी।

बेपदउंल श्रंपद का वश्य चतुष्पद तथा छर्पीतपां रंपद का वश्य जलचर है। अतः इन स्वाभाविक अभिरूचियां समान रहेंगी तथा परस्पर एक दूसरे को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे। यद्यपि यदा कदा बेपदउंल श्रंपद के कारण इसमें किंचित न्यूनता आ सकती है लेकिन सामान्यतया शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक रूप से आप एक दूसरे को सन्तुष्ट रखेंगे तथा सुख के क्षणों की भी प्राप्ति होगी।

बेपदउंल श्रंपद का वर्ण क्षत्रिय है तथा छर्पीतपां रंपद का वर्ण वैश्य है। अतः इनकी कार्य क्षमताओं में विभिन्नता रहेगी। जहां बेपदउंल श्रंपद साहसी एवं पराक्रमी कार्यो को सम्पन्न करेंगी वहीं छर्पीतपां रंपद धनार्जन के प्रति विशेष रूचिशील रहेंगी तथा व्यावहारिक दृष्टि से अपने अधिकांश कार्यो को सम्पन्न करेंगी।

धन

बेपदउंल श्रंपद और छर्पीतपां रंपद दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य

जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

बेपदउंल श्रंपद की नाड़ी आद्य तथा छपींतपां रंपद की नाड़ी अन्त्य है। अतः अलग अलग नाड़ियों में उत्पन्न होने के कारण इन पर नाड़ी दोष का प्रभाव नहीं रहेगा जिससे किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा परन्तु मंगल का छपींतपां रंपद के स्वास्थ्य पर अशुभ प्रभाव होगा जिससे उनको गर्भपात संबंधी परेशानी की संभावना होगी तथा धातु संबंधी रोगों से भी यदा कदा कष्ट की प्राप्ति होगी। साथ ही मासिक धर्म संबंधी परेशानी का भी यदा कदा सामना करना पड़ेगा। अतः मंगल के इस दुष्प्रभाव को कम करने के लिए छपींतपां रंपद को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से बेपदउंल श्रंपद और छपींतपां रंपद का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त बेपदउंल श्रंपद और छपींतपां रंपद के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में छपींतपां रंपद के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन छपींतपां रंपद को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में छपींतपां रंपद को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से बेपदउंल श्रंपद और छपींतपां रंपद सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार बेपदउंल श्रंपद और छपींतपां रंपद का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

छपींतपां रंपद के अपनी सास के साथ संबधों में मधुरता रहेगी तथा इनके मध्य परस्पर सामंजस्य भी रहेगा। साथ ही सास से छपींतपां रंपद को कभी भी कोई परेशानी या समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। छपींतपां रंपद भी उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान

रखेंगी तथा सेवा करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

ससुर पक्ष से छपींतपां रंपद को यदा कदा अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा एवं वे सन्तुष्ट तथा प्रसन्न अल्प मात्रा में ही रहेंगे। तथापि उनका हृदय जीतने के लिए छपींतपां रंपद उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं परस्पर सामंजस्य स्थापित करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। साथ ही देवर एवं ननदों से भी छपींतपां रंपद के मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर स्नेह एवं सहयोग के भाव की भी न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त परस्पर प्रतिद्वन्दिता तथा आलोचना का भाव रहेगा।

सामान्य रूप से सास ससुर का छपींतपां रंपद के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण रहेगा तथा परिवार में उसकी महता को स्वीकार करेंगे।

ससुराल-श्री

बेपदउंल श्रंपद तथा सास के संबधों में विशेष मधुरता का भाव नहीं रहेगा तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण दोनों के मध्य वैचारिक मतभेद रहेंगे लेकिन इनमें अधिक गंभीरता नहीं रहेगी। यदि बेपदउंल श्रंपद तथा इनकी सास आपसी सामंजस्य तथा बुद्धिमता से व्यवहार करें तो संबधों की मधुरता में वृद्धि हो सकती है।

लेकिन ससुर के साथ में बेपदउंल श्रंपद के संबध मधुर रहेंगे तथा उनके प्रति मान सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। साथ ही उनसे पिता के समान ही व्यवहार करेंगे। साथ ही वे भी बेपदउंल श्रंपद को पुत्रवत स्नेह तथा वात्सल्य प्रदान करेंगे। बेपदउंल श्रंपद समय समय पर अपने ससुर से आवश्यक तथा बहुमूल्य सलाह तथा निर्देश भी प्राप्त करते रहेंगे परन्तु साले तथा सालियों के साथ में संबधों में तनाव तथा मतभेद रहेंगे तथा एक दूसरे के प्रति आलोचना तथा प्रतिद्वन्दिता का भाव रहेगा जिससे आपस में स्नेह सहयोग तथा सहानुभूति के भाव में न्यूनता रहेगी।

इस प्रकार सामान्य रूप से ससुरालवालों का दृष्टिकोण बेपदउंल श्रंपद के प्रति अनुकूल ही रहेगा।